

॥ श्रीराधावल्लभ श्रीहित हरिवंश ॥

॥ श्रीवृन्दावन श्रीवनचंद्र ॥



उत्सव-निर्णय-पत्रम्



प्रकाशक :

श्रीहित हरिवंश प्रचार मण्डल ट्रस्ट (रजि.)

श्रीराधावल्लभ मन्दिर, श्रीहित वृन्दावन

मो. 9193395000, 9193396000

हिताब्द 553 संवत् 2083 वि. सन 2026-27



@ShriRadhaVallabhMandir

• वंशवृक्ष •

क्र.
स.

अधिकारी जी को नाम

प्राकट्य
(वि. स.)

निकुंज लीला प्रवेश
(वि. स.)

गद्दी विराजमान
(वि. स.)

बहु जी महाराज

आद्यब्रह्मसिद्धाद्वैत श्रीराधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य वंशी अवतार श्रीवृन्दावनधाम प्रागट्यकर्त्ता

1.	गोस्वामी श्रीहित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी	वैशाख सुदी एकादशी 1530 - सोमवार	अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) 1609	-	श्रीमती रुक्मिणी देवी
2.	गोस्वामी श्रीहित वनचंद्र महाप्रभु जी अधिकारी जी	चैत्र बदी छठी, 1544	1666	1609-1666	श्रीमती वनरानी कुँवर जी
3.	गोस्वामी श्रीहित सुंदरवर जी महाप्रभु अधिकारी जी	अश्विन पूर्णिमा, 1609	1690	1666-1690	श्रीमती कनकप्रभा कुँवर जी
4.	गोस्वामी श्रीहित दामोदरवर जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	आषाढ़ सुदी पून्यौ, 1634	1715	1690-1714	श्रीमती कृष्णांजनी कुँवर जी
5.	गोस्वामी श्रीहित विलासदास जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	आषाढ़ सुदी तेरस, 1656	अठारहवीं शताब्दी	1690-1714	श्रीमती रत्नप्रभा कुँवर जी
6.	गोस्वामी श्रीहित श्यामलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	नवसंवत्सर, 1674	अठारहवीं शताब्दी	1715-****	श्रीमती गौरांगी कुँवर जी
7.	गोस्वामी श्रीहित सुखलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	मार्गशीर्ष अमावस्या, 1715	अठारहवीं शताब्दी	अठारवीं शताब्दी	श्रीमती नित्यानंदिनी कुँवर जी
8.	गोस्वामी श्रीहित नवनीतलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	आषाढ़ सुदी दौज (रथयात्रा)	अठारहवीं शताब्दी	अठारवीं शताब्दी	श्रीमती श्याम्वी कुँवर जी
9.	गोस्वामी श्रीहित रमणलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	नवसंवत्सर	उन्नीसवीं शताब्दी	उन्नीसवीं शताब्दी	श्रीमती विमोहिना कुँवर जी
10.	गोस्वामी श्रीहित जीवनलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	अश्विन बदी दशमी	उन्नीसवीं शताब्दी	उन्नीसवीं शताब्दी	श्रीमती रासेश्वरी कुँवर जी
11.	गोस्वामी श्रीहित मोहनलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	माघ शुक्ल दौज	उन्नीसवीं शताब्दी	उन्नीसवीं शताब्दी	श्रीमती चारूपा कुँवर जी
12.	गोस्वामी श्रीहित लाङ्गिलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	वैशाख सुदी एकादशी (हितोत्सव)	1934	उन्नीसवीं शताब्दी	श्रीमती हितवंदिनी कुँवर जी
13.	गोस्वामी श्रीहित हरलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	चैत्र कृष्ण पक्ष चौथ, 1902	1930	बीसवीं शताब्दी	श्रीमती मोहनांगी कुँवर जी
14.	गोस्वामी श्रीहित किशोरीलाल लाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	भाद्रपद सुदी, अष्टमी 'राधाष्टमी', 1928	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा, 1999	1941-1999	श्रीमती नारायणी कुँवर जी
15.	गोस्वामी श्रीहित रूपलाल लाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	आषाढ़ बदी पंचमी, 1957	चैत्र सुदी षष्ठी, (यमुना छठ), 2019	1997-2019	श्रीमती गंगा कुँवर जी
16.	गोस्वामी श्रीहित सुकुमारी लाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	आषाढ़ कृष्ण अमावस्या, 1979	चैत्र कृष्ण पंचमी, 2039	2019-2039	श्रीमती गणेश कुँवर जी
17.	गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	मार्गशीर्ष सुदी चतुर्दशी, 2003	विराजमान	2033- विराजमान	श्रीमती संध्या कुँवर जी
18.	गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज तिलकायत अधिकारी जी	माघ बदी चतुर्थी, 2031	विराजमान	चैत्र सुदी नवमी (रामनवमी) 2079 -विराजमान	श्रीमती मोहिनी कुँवर जी
19.	गोस्वामी श्रीहित शोभित लाल जी महाराज युवराज जी	अश्विन सुदी तेरस, 2059 'मनमथ'	विराजमान	युवराज तिलक चैत्र सुदी नवमी (रामनवमी) 2079 -विराजमान	-

॥ श्रीराधावल्लभ श्रीहित हरिवंश ॥ ॥ श्रीवृंदावन श्रीवनचंद्र ॥



अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डनायक
श्रीराधावल्लभलालजी महाराज कौ

(प्रामाणिक साम्प्रदायिक) सं. 2083

श्रीमद् बापूदेव शास्त्रि प्रवर्तित दृक्सिद्ध पञ्चाङ्गम्

आज्ञा से :

श्रीराधावल्लभोय सम्प्रदायाचार्य

तिलकायत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी महाराज

वर्तमान तिलकायत अधिकारी श्रीहित मोहितमराल गोस्वामी जी महाराज

मो. 7500025000

श्रीहित शोभित लाल गोस्वामी जी (युवराज) मो. 8439810102

सम्पादक : श्रीहित आनंदलाल गोस्वामी (सेवायत -सेवाकुंज, निकुन्जवन)

॥ श्रीराधावल्लभ श्रीहित हरिवंश, श्रीवृंदावन श्रीवनचंद्र ॥

टीकैत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित राधेशलाल जी महाराज

वर्तमान टीकैत अधिकारी श्रीहित मोहित मराल गोस्वामी जी महाराज

युवराज गोस्वामी श्रीहित शोभितलाल जी महाराज

श्रीराधावल्लभ मंदिर (श्रीहित वृंदावन) टीकैत अधिकारी जी के
द्वारा निर्धारित होने वाली सेवाओं का विवरण

◦ सैवा विवरण 2026-27 ◦

चैत्र	03.03.2026	रात्रि से	03.04.2026	तक
शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	02.05.2026	-----	-----	---
अधिक मास	17.05.2026	रात्रि से	01.06.2026	तक
शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	16.06.2026	रात्रि से	01.07.2026	तक
श्रावण	30.07.2026	रात्रि से	20.08.2026	तक
भाद्रपद	13.09.2026	रात्रि से	27.09.2026	तक
कार्तिक	27.10.2026	रात्रि से	25.11.2026	तक
पौष	24.12.2026	रात्रि से	23.01.2027	तक
फाल्गुन	21.02.2027	रात्रि से	22.03.2027	तक

विशेष :

मंदिर सम्बन्धी समस्त जानकारी

9193395000, 9193396000





श्री राधावल्लभ संप्रदाय प्रधान पीठाधिपति
तिलकायत अधिकारी गोस्वामी जय
श्रीहित राधेशलाल जी महाराज



श्री राधावल्लभ संप्रदाय प्रधान पीठाधिपति वर्तमान तिलकायत
अधिकारी गोस्वामी जय श्रीहित मोहितमराल जी महाराज



श्रीहित वृन्दावन रस रीति प्रवर्तक
रस वपु वंशी अवतार गोस्वामी
श्रीहित हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी

अथ श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जू कौ मंगल



नव निभूत निकुंज विलासी श्री
राधावल्लभलाल जी महाराज

जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मण्डना ।

रसिक अनन्यनि मुख्य गुरु जन भय खण्डना॥

श्री वृन्दावन बास रास रस भूमि जहाँ ।

क्रीडत श्यामा श्याम पुलिन मंजुल तहां ॥

पुलिन मंजुल परम पावन त्रिविध तहां मारुत बहै ।

कुञ्ज भवन विचित्र शोभा मदन नित सेवत रहै ॥

तहां सन्तत व्यास नन्दन रहत कलुष विहण्डना ।

जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मण्डना ॥ १ ॥

जय जय श्री हरिवंश चन्द्र उदित सदा ।

द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख सम्पदा ॥

पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी ।

करुणासिन्धु कृपाल काल भय सब हरी ॥

हरी सब कलिकाल की भय कृपा रूप जु वपु धरयौ ।

करत जे अनसहन निन्दक तिनहुँ पै अनुग्रह करयौ ॥

निरभिमान निर्वैर निरुपम निष्कलंक जु सर्वदा ।

जय जय श्री हरिवंश चन्द्र उदित सदा ॥ २ ॥

जय जय श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी ।

सारासार विवेकित कोविद बहु गुनी ॥

गुप्तीति आचरण प्रगट सब जग दिये ।

ज्ञान धर्म व्रत क्रम भक्ति किंकर किये ।

भक्ति हित जे शरण आये हृन्द दोष जु सब घटे ।

कमल कर जिन अभय दीने कर्म बन्धन सब कटे ॥

परम सुखद सुशील सुन्दर पाहि स्वामिनी मम घनी॥

जय जय श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी ॥ ३ ॥

जय जय श्री हरिवंश नाम गुण गाई है ।

प्रेम लक्षणा भक्ति सुदृढ़ करी पाई है ॥

अरु बाढ़े रसरीति प्रीति चित ना टरै ।

जीति विषम संसार कीरति जग बिस्तरै ॥

विस्तरै सब जग विमल कीरति साधु संगति ना टरै ।

वास वृन्दाविपिन पावै श्रीराधिका जु कृपा करै ॥

चतुर युगल किशोर सेवक दिन प्रसादहिं पाई है ।

जय जय श्री हरिवंश नाम गुण गाई है ॥ ४ ॥

मधुरितु माधव मास सुहाई । भाग प्रकाश व्यास नन्दन

मुख फूल्यौ कमल अमल छबि छाई श्रवत मधुर मकरन्द

सुयश निज कुन्ज केलि सौरभ सरसाई ।

सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन कृष्णदास सुख सार सदाई ॥



श्री राधावल्लभ संप्रदाय आचार्य युवराज गोस्वामी
श्रीहित शोभित लाल जी महाराज



श्रीहित चूदावन रस रीति प्रवर्तक रस
वपु वंशी अवतार गोस्वामी श्रीहित
हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी

अथ श्रीहित यमुनाष्टक



ब्रजाधिराज – नन्दनाम्बुदाभ गात्र चंदना-
नुलेप गंध वाहिनी भवाब्धि बीज दाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनी लसत्सुधा पयस्विनी-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥1॥

रसैकसीम राधिका पदाब्जभक्ति साधिकां
तदंग-राग पिंजर प्रभाति पुंज मंजुलाम् ।
स्वरोचिषाति शोभितां कृतां जनाधिगंजनां-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥2॥

ब्रजेन्द्र सूनु राधिका हृदि प्रपूर्यमाणयो-
महा रसाब्धि पूरयो रिवाति तीव्र वेगतः ।
बहिः समुच्छलन्नव प्रवाह रूपिणीमहं-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥3॥

विचित्र रत्न बद्ध सत्तटद्वय श्रियोञ्जवलां-
विचित्र हंस सारसाद्यनन्त पक्षि संकुलाम् ।
विचित्र मीन मेखलां कृताति दीन पालितां-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥4॥

वहंतिकां श्रियां हरेर्मुदा कृपा स्वरूपिणी-
विशुद्ध भक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः

सुधा श्रुतित्वलौकिकी परेश वर्ण रूपिणी-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥5॥

सुरेन्द्र वृन्द वन्दितां रसादधिष्ठिते वने-
सदोपलब्ध माधवाद्भुतैक सदृशोन्मदाम् ।
अतीव विह्वलामिव च्यलत्तरंग दोर्लतां-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥6॥

प्रफुल्ल पंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणां-
रथांगनाम युग्म कस्तनीमुदार हंसिकाम् ।
नितंब चारु रोधसां हरेः प्रिया रसोज्ज्वलां-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥7॥

समस्त वेद मस्तकैरगम्य वैभवां सदा-
महा मुनीन्द्र नारदादिभिः सदैव भाविताम् ।
अतुल्य पामरैरपि श्रितां पुमर्थ शारदां-
भजे कलिन्द नन्दिनी दुरंत मोह भंजनीम् ॥8॥

य एतदष्टकं बुध स्त्रिकाल मादृतः पठेत्-
कलिन्द नन्दिनी हृदा विचिंत्य विश्व वंदिताम् ।
इहैव राधिकापतेः पदाब्ज भक्ति मुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः ॥9॥

श्रीहित रस साहित्य



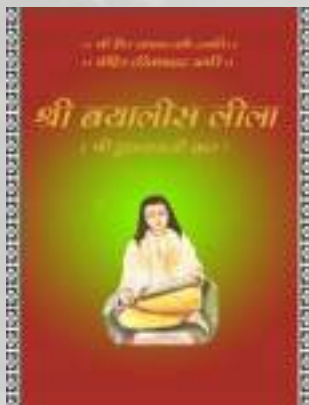
चार महावाक्य की
ब्रजभाषा टीका



श्रीहित चतुराशी जी
श्री सेवकवाणी जी
(व्याख्या सहित)



श्रीहित राधावल्लभ
अष्टयाम



श्री बयालीस लीला



हितोपासना



श्रीहित चतुराशी जी
श्री सेवकवाणी जी, स्फुट वाणी
(मूल पाठ)

प्राप्ति स्थल :

श्री राधावल्लभ मंदिर के मुख्य द्वार के सामने कार्यालय

श्रीहित हरिवंश प्रचार मंडल ट्रस्ट (रजि०)

संपर्क: 9193395000, 9193396000



गुलाब डोल

29 मार्च 2026

गुलाब डोल परिचय

श्रीजी महाराज का गुलाब डोल उत्सव:

चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन जब प्रकृति अपने पूर्ण श्रृंगार में होती है, तब श्रीजी महाराज अपने रसिक भक्तों को गुलाब डोल में दर्शन देते हैं। सखियाँ अपने स्नेह और लाड़ से श्रीजी को गुलाब डोल में विराजमान कर प्रेम से झुलाती हैं।



डोल की अलौकिक रचना :

चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन, संध्या समय चैती गुलाब के फूल, निबोड़े के फूल, तथा पीत चमेली के फूलों से डोल बनाया जाता है। संध्या को धूप आरती से शयन पर्यंत गुलाब के डोल में झूले। पद समाज भोग आदि होते हैं

श्रृंगार में श्रीजी को गुलाबी रंग के वस्त्र एवं गुलाबी श्रृंगार धराए जाते हैं।



समाज गायन और पद की मिठास :

संध्या आरती के पश्चात, “फूलन कुँज गुलाब की बनक बनी अति सोहै” पद का गायन होता है।



गुलाब की भीनी खुशबू, निबोड़े की, पीत चमेली की खुशबू और श्री राधावल्लभ लाल का मनोहारी श्रृंगार सभी रसिकों को मोहित करता है।



इस दिन का विशेष अमनिया (भोग) :

इस पावन अवसर पर श्रीजी को विशेष रूप से मालपुआ, जलेबी एवं दूध का अमनिया (भोग) श्री जी के सन्मुख पधराया जाता है।

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

॥ श्रीहितहरिवंशचन्द्रो जयति ॥ ॥

श्रीअधिकारी किशोरी, हित रूप, गुरु सुकुमारी विजयेताम् ॥

॥ श्रीहित भजन लालो विजयते ॥

श्रीराधावल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होय । जिते विनायक शुभ-अशुभ, विघ्न करें नही कोय ॥
हित की यहाँ उपासना, हित के हैं हम दास । हित विशेष राखत रहों, चित्त नित हित की आस ॥

उत्सव-निर्णय-पत्रम्

चैत्र शुक्ल पक्ष

(सेवा-गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल तिलकायत अधिकारी विलासवंश)

ता. माह तिथि वार उत्सव सन् 2026

- 19 मार्च 1 गुरु रौद्र नाम संवत प्रारंभ 2083, नवीन पोशाक धारण, राजभोग में खीर आदि विशेष
24 मार्च 6 मंगल यमुना महोत्सव ।
27 मार्च 9 शुक्र रामनवमी, लाल-पीली पोशाक, विशेष भोग, समाज में राम-जन्म बधाई ।
29 मार्च 11 रवि कामदा एकादशी (गुलाब डोल), संध्या पश्चात् "फूलन कुँज गुलाब" यह पद होय ।
02 अप्रैल 15 गुरु पूर्णिमा, श्रीहितरास मण्डल पर आज से श्रीहित महाप्रभुजी की बधाई प्रारम्भ ।
आज शृंगार भोग में मोहन थार आदि भोग रखनों।

वैशाख कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 03.04.2026 शुक्र रात्रि से)

- 4 अप्रैल 2 शनि दौज - मन्दिर में श्रीहित चतुरासीजी एवं सेवकवाणीजी की समाज प्रारम्भ ।
13 अप्रैल 11 सोम एकादशी (बरूथिनी) ।
17 अप्रैल 30 शुक्र अमावस्या ।

वैशाख शुक्ल पक्ष

- 4 अप्रैल 2 शनि दौज - मन्दिर में श्रीहित चतुरासीजी एवं सेवकवाणीजी की समाज प्रारम्भ ।
13 अप्रैल 11 सोम एकादशी (बरूथिनी) ।
17 अप्रैल 30 शुक्र अमावस्या ।
20 अप्रैल 3 सोम अक्षय तृतीया चंदनोत्सव, चंदन का श्रृंगार, श्रीजी चंदनी पोशाक धारण करें, ग्रीष्म ऋतु को शृंगार समाज में चन्दन के पद
21 अप्रैल 5 मंगल श्रीहित मुकुटमणि गोस्वामी जी को जन्मोत्सव ।
24 अप्रैल 8 शुक्र आज से 4 दिन चाव निकले, श्रीजी महाराज के मन्दिर से ।
26 अप्रैल 10 रवि श्रीजी महाराज के लाल पोशाक धारण, रासमण्डल पर रात्रि जागरण, ढाँढी-ढाँढिनि नृत्य, बधाई-गान।

27 अप्रैल 11 सोम एकादशी (मोहनी) श्रीहितराधावल्लभ सम्प्रदाय प्रवर्तक अनन्तश्रीविभूषित,
वंशी अवतार, रसावतार, श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी कौ प्राकट्योत्सव,
श्रीजी मन्दिर में मंगला से पूर्व बधाई-गान, विशेष भोग, भारी पोशाक, मंदिर में सजावट,
रोशनी इत्यादि। गोस्वामी श्रीलाङ्गिलीलाल जी अधिकारी कौ जन्मोत्सव, हिताब्द 551 प्रारम्भ ।

01 मई 15 शुक्र पूर्णिमा । श्री हित आनंद लाल गोस्वामी जी को जन्मोत्सव

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

(सेवा- तिलकायत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज विलासवंश 02.05.2026, शनिवार रात्रि से)

2 मई 1 शनि श्रीहित महाप्रभु जी को छठी उत्सव ।
3 मई 2 रवि वनविहार रात्रि में समाज के साथ श्रीवृन्दावन परिक्रमा ।
6 मई 6 बुध श्रीहित महाप्रभु जी को दष्टौन ।
13 मई 11 बुध एकादशी (अपरा) ।
16 मई 30 शनि अमावस्या ।

पुरुषोत्तम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (अधिक मास)

(17 मई से 1 जून 2026 तक)

26 मई 11 मंगल एकादशी (कमला एकादशी)।
31 मई 15 रवि पूर्णिमा

पुरुषोत्तम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (अधिक मास)

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 01.06.2026 सोमवार रात्रि से)

11 जून 11 गुरु एकादशी (कमला एकादशी)।
15 जून 15 सोम सोमवती अमावस्या

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

(सेवा- तिलकायत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज विलासवंश 16.06.2026 मंगल रात्रि से)

24 जून 10 बुध गंगा दशहरा ।
25 जून 11 गुरु एकादशी (निर्जला) जल विहार के पद, श्रीजी नौका में या कुञ्ज में विराजें ।
"सुन्दर पुलिन सुभग सुखदायक" यह पद समाज में होय ।
29 जून 15 सोम पूर्णिमा ।

हरित क्रांति

वृन्दावन को
वृन्दा(वन) बनाने में
हमारा सहयोग करें

M. 9193317000



निःशुल्क चिकित्सा शिविर

मेडिकल टीम



डॉ. स्नेह प्रभा किंकर

(सेवा निवृत्त वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ)
अनुभव : 50 वर्ष

डॉ. मृणाल किंकर

(वरिष्ठ पेट रोग एवं दूरबीन सर्जन)
अनुभव : 25 वर्ष

डॉ. शिल्पा गुप्ता

(नेत्र रोग विशेषज्ञ)
अनुभव : 5 वर्ष

श्री गौरव चतुर्वेदी

(Ex Godrej Professional (B.E. & Social
Worker From 10yrs)
अनुभव : 25 वर्ष

श्री सुभाष सिंह

(सेवा निवृत्त आर्मी अधिकारी)
अनुभव : 25 वर्ष

सु. श्री रौशनी

(मेडिकल हेल्पर)
अनुभव : 1 वर्ष

सहयोगी संस्था

डॉ. श्राफ आई

केयर इंस्टीट्यूट

(नई दिल्ली)

आरोग्य पीठ

(वृंदावन)



Donation For Medical Camp



Federal Bank
Account Number :
22230200001771
IFSC : FDRLO002223

फूल बंगला

20 अप्रैल -
16 जुलाई 2026





श्रीजी महाराज का फूल बंगला उत्सव:

वैशाख शुक्ल तृतीया, जिसे अक्षय तृतीया या चंदन उत्सव कहा जाता है। इस दिन से ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ होने के कारण श्री राधावल्लभ लाल को शीतलता प्रदान करने के लिए फूल बंगला, पुष्प कुंज, खस की बैठकें तथा नौका विहार जैसे मनोरथ सिद्ध किए जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु का यह विशेष श्रृंगार और सेवा क्रम वैशाख से प्रारंभ होकर आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (रथ यात्रा) तक चलता है।

फूल बंगलों की रचना :

ग्रीष्म ऋतु में श्री राधावल्लभ लाल को शीतलता प्रदान करने हेतु सखियाँ विविध भाँति से पुष्प कुंजों की रचना करती हैं।

- कलात्मक संरचना : इन बंगलों को मोगरा, गुलाब, चमेली, बेला एवं रजनीगंधा आदि सुगंधित पुष्पों से बनाया जाता है।
- फूल बंगलों में आम का, फलों का, खस का बंगला बनता है। अलग अलग प्रकार की बैठक एवं श्री जी के सन्मुख तरह तरह के जलयंत्र (फव्वारे) चलते हैं।

कलात्मक रचना : निबोड़े के फूलों की लड़ी को लकड़ी के चौखटा पर जालिया काट के बहुत ही सुन्दर तरीके से बंगले का स्वरूप दिया जाता है।

पुष्प श्रृंगार :

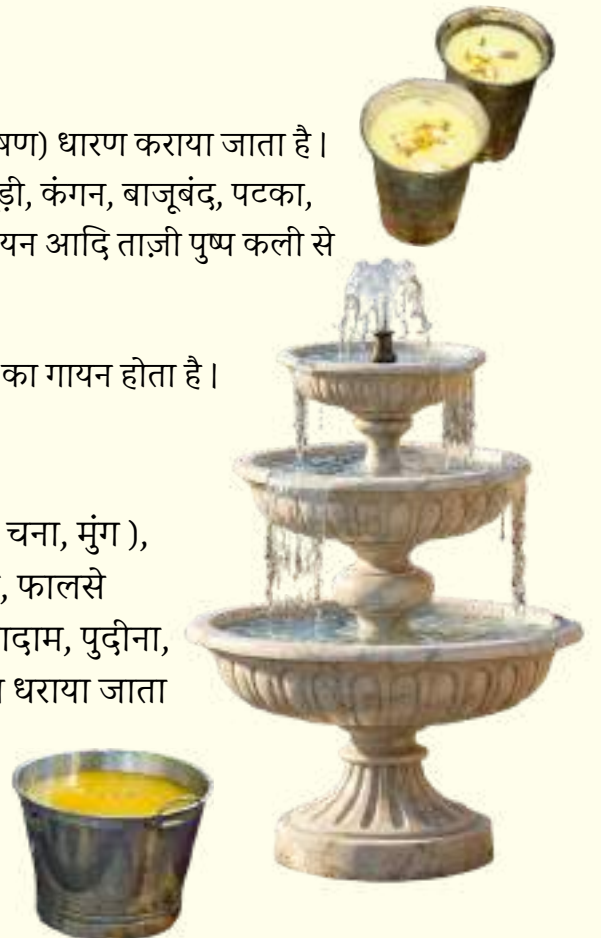
संध्या समय श्रीजी राधावल्लभ लाल जी महाराज को पुष्पों का श्रृंगार (आभूषण) धारण कराया जाता है।

- पुष्प आभूषण: टिपारे, शिखी, कुंडल, मांग, कंठा, चन्द्रहार, कंठहार, चूड़ी, कंगन, बाजूबंद, पटका, छोर, वेणी, कमरपेटी, किंकणी, मुकुट, जेहर, तेहर, पायल, नुपुर, पगपायन आदि ताज़ी पुष्प कली से निर्मित होते हैं।

समाज गायन : चन्दन के पद, फूल रचना, जल बिहार, नौका बिहार के पदों का गायन होता है।

विशेष शीतल भोग :

श्री राधावल्लभ लाल को शीतलता प्रदान हेतु ग्रीष्म ऋतु में भीगी दालें (चना, मूंग), सत्तू, आमरस, पन्ना (कच्चे आम का), बेल का रस, संतरा, लीची, अनार, फालसे आदि का रस एवम् कई प्रकार के गुलाब, खस, मोगरा, चन्दन, केवड़ा, बादाम, पुदीना, काली मिर्च, सौंफ आदि के शरबत तथा कई प्रकार की ठंडाईयों का भोग धराया जाता है।



आषाढ कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 01.07.2026 बुधवार रात्रि से)

- 5 जुलाई 5 रवि गोस्वामी श्रीहितरूपलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव ।
गोस्वामी श्रीहित डॉ. गोविन्दलाल जी कौ जन्मोत्सव ।
- 11 जुलाई 11 शनि एकादशी (योगिनी) ।
- 14 जुलाई 30 मंगल अमावस्या, परम पूज्य गुरुदेव गोस्वामी श्रीहित सुकुमारी लाल जी तिलकायत अधिकारी को जन्मोत्सव ।

आषाढ शुक्ल पक्ष

- 16 जुलाई 2 गुरु रथयात्रा, श्रीजी लाल बागो धारण करें, मल्हार के पद प्रारंभ समाज में, रथयात्रा के पद 'रथ चढ़ि आवत सांवरो' प्रथम श्रीहितजू महाराज की मल्हार होय, गो० श्रीहित नवनीतलाल जी अधिकारी को जन्मोत्सव ।
- 25 जुलाई 11 शनि एकादशी (देवशयनी) ।
- 27 जुलाई 13 सोम गोस्वामी श्रीहित विलासदास जी महाराज अधिकारी कौ जन्मोत्सव ।
- 29 जुलाई 15 बुध गुरु पूर्णिमा, गोस्वामी श्रीहित दामोदरवर प्रभु अधिकारी कौ जन्मोत्सव, सेवकचरित्र कथा प्रारम्भ ।

श्रावण कृष्ण पक्ष

(सेवा-तिलकायत अधिकारी गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज विलासवंश 30.07.2026, गुरुवार रात्रि से)

- 06 अगस्त 8 गुरु श्रीहित हितलालजी गोस्वामी कौ जन्मोत्सव ।
- 09 अगस्त 11 रवि एकादशी (कामिका) आज से श्रीसेवकजी महाराज कौ उत्सव-बधाई प्रारम्भ होय । मोहनभोग कौ भोग लगै ।
- 12 अगस्त 30 बुध अमावस्या हरियाली (हरी पोशाक धारण)।

श्रावण शुक्ल पक्ष

14 अगस्त 2 शुक्र सिंधारौ उत्सव, रात्रि समाज में सिंधारे और मेंहदी के पद
रात्रि में सिंधारे की सब वस्तु सिद्धा में धराई जायें।

15 अगस्त 3 शनि हरियालीतीज (श्रीसेवकजी कौ जन्मोत्सव) हिंडोरा (झूला) प्रारम्भ ।

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 20.08.2026 गुरुवार रात्रि से)

24 अगस्त 11 सोम एकादशी (पवित्रा) श्रीजी दोनों समय पवित्रा धारण करें,
समाज में पवित्रा के पद

28 अगस्त 15 शुक्र पूर्णिमा (रक्षाबन्धन-श्रीजी दोनों समय राखी धारण करें) रक्षाबन्धन के पद,
लालजी की बधाई- प्रारम्भ-आनंद “आज नंद के द्वार”,
संध्या आरती पीछे झूला की समाप्ति ।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

04 सितंबर 8 शुक्र श्रीकृष्णजन्माष्टमी श्रीलालजी की बधाई समाज में ।

05 सितंबर 9 शनि नन्दोत्सव, औलाई नही होय, हितोत्सव की तरह साथिये स्थापित,
श्रीहित गोपाललाल गोस्वामीजी को जन्मोत्सव ।

07 सितंबर 11 सोम एकादशी (अजा) ।

09 सितंबर 13 बुध लालजी की छठी, समाज में आज से प्रियाजी की बधाई प्रारम्भ
"चलौ वृषभानु गोप के द्वार" ।

11 सितंबर 30 शुक्र अमावस्या ।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

(सेवा-गोस्वामी श्रीहित मोहितमराल तिलकायत अधिकारी विलासवंश 13.09.2026, रविवार रात्रि से)

16 सितंबर 5 बुध आज से चाव, श्री हितोत्सव की भाँति चार दिन पर्यन्त
'श्रीहितरासमण्डल' में जाये (दो दिन बड़ी सरकार से)।

18 सितंबर 7 शुक्र लाल पोशाक धारण करें रात्रि में शयन आरती के बाद दर्शन खुलें,
रात्रिभर ढाँढ़ी ढाँढ़िन कौ नृत्य, चौदण्डी केला मंडप वंदनवार आदि बँधे,
आज औलाई नही होय, शयन आरती पीछे नई पहुंची,
चिबुक वेसर, हथफूल धारण होय।

हितोत्सव

27 अप्रैल 2026



श्रीहितोत्सव :

वैशाख शुक्ल एकादशी सोमवार संवत् 1530, से श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी का प्राकट्य दिवस, यह उत्सव हम रसिक अनन्य धर्मियों के लिए परमानन्द का दिन है।

"मधुऋतु माधव मास सुहाई" वसंत ऋतु को प्रेम की ऋतु माना जाता है और वैशाख (माधव मास) इस ऋतु का चरमोत्कर्ष है। प्रकृति जब अपने पूर्ण श्रृंगार में होती है, तब साक्षात् 'हित' प्रेम स्वरूप श्री महाप्रभु जी का प्राकट्य सब रसिकों को सुख देने के लिए हुआ।

श्रृंगार :

श्रीराधावल्लभ लाल पीली पोषाक,
मंदिर को पीली घटा, फूलों की सजावट, विशेष पुष्प कुंज, केले के खम्ब, बंदनवार से सजाया जाता है।
श्रीराधावल्लभ लाल का अभिषेक मंगला आरती उपरांत एवं श्रृंगार समय कलस और साथिये (स्वास्तिक) धराये जाते हैं।

चार दिवसीय चाव सवारी :

उत्सव की उमंग में चार दिनों तक विशेष चाव सवारी निकाली जाती है:

- मार्ग: यह सवारी मंदिर से प्रस्थान कर बड़े रासमंडल तक जाती है, जहाँ रसिक जन नाचते-गाते हुए चलते हैं।
- विशेष भोग: चाव सवारी के दौरान श्रीजी महाराज को विशेष रूप से 'चना' का भोग सिद्ध किया जाता है।

बधाई गायन और समाज :

- प्रातः काल: मंगला आरती से पूर्व, ठीक राधा अष्टमी की भांति, समाज में बड़े उल्लास के साथ बधाई के पदों (भैया हो अद्भुत मंगल आज प्रगटे श्री हरिवंशचन्द्रवर, रसिकन के सरताज) का गायन होता है।
- संध्या काल: संध्या काल में श्री महाप्रभु जी के मंदिर में समाज गायन

उत्सव का विशेष भोग :

हितोत्सव के अवसर पर श्रीजी महाराज को विविध प्रकार के सुखद व्यंजनों का भोग लगाया जाता है:

- मुख्य सामग्रियाँ: विशेष रूप से मोहन भोग बादाम, मखाना, पिस्ता आदि के पाग मिठाईयाँ, पंजिरी, लड्डू, मठरी, गुजियाँ इत्यादि का भोग धराया जाता है।



पाग



पंजीरी







ब्रज 84 कौस परिक्रमा

27 नवम्बर से 3 दिसंबर 2026



यमुनापार | गोवर्धन | डीग | कांमा | बरसाना | नंदगाँव | कोसी | मथुरा



अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें : 9193396000, 9193317000

Shaping Tomorrow Across Industries

From infrastructure to innovation, we deliver excellence across diverse sectors—creating value, trust, and growth.



We are a dynamic, multi-business enterprise driving progress across key industries:

Real Estate –

Crafting premium residential & commercial spaces

Construction –

Building strong foundations with quality and precision

Cold Storage Solutions –

Preserving freshness with advanced technology

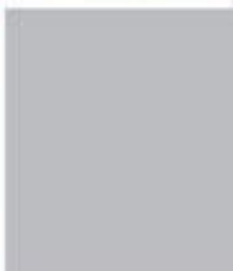
Laminates & Plywood –

Durable, stylish, and reliable surfaces

Electronics –

Powering modern lifestyles with smart solutions

With a commitment to quality, innovation, and integrity, we transform ideas into enduring success stories.



SWASTIK GROUP
bringing prosperity in your life

Chhattisgarh • Madhya Pradesh • Odisha • Telangana • Andhra Pradesh • Gujarat • Tripura • Bihar • Jharkhand • Maharashtra • Rajasthan



Survey No. 00023
Khasra No. 574, 565, 561, 561, 562, 562, 562, 562
Gram BAHADA, Ring Road No. 03,
Raipur, Chhattisgarh 492111

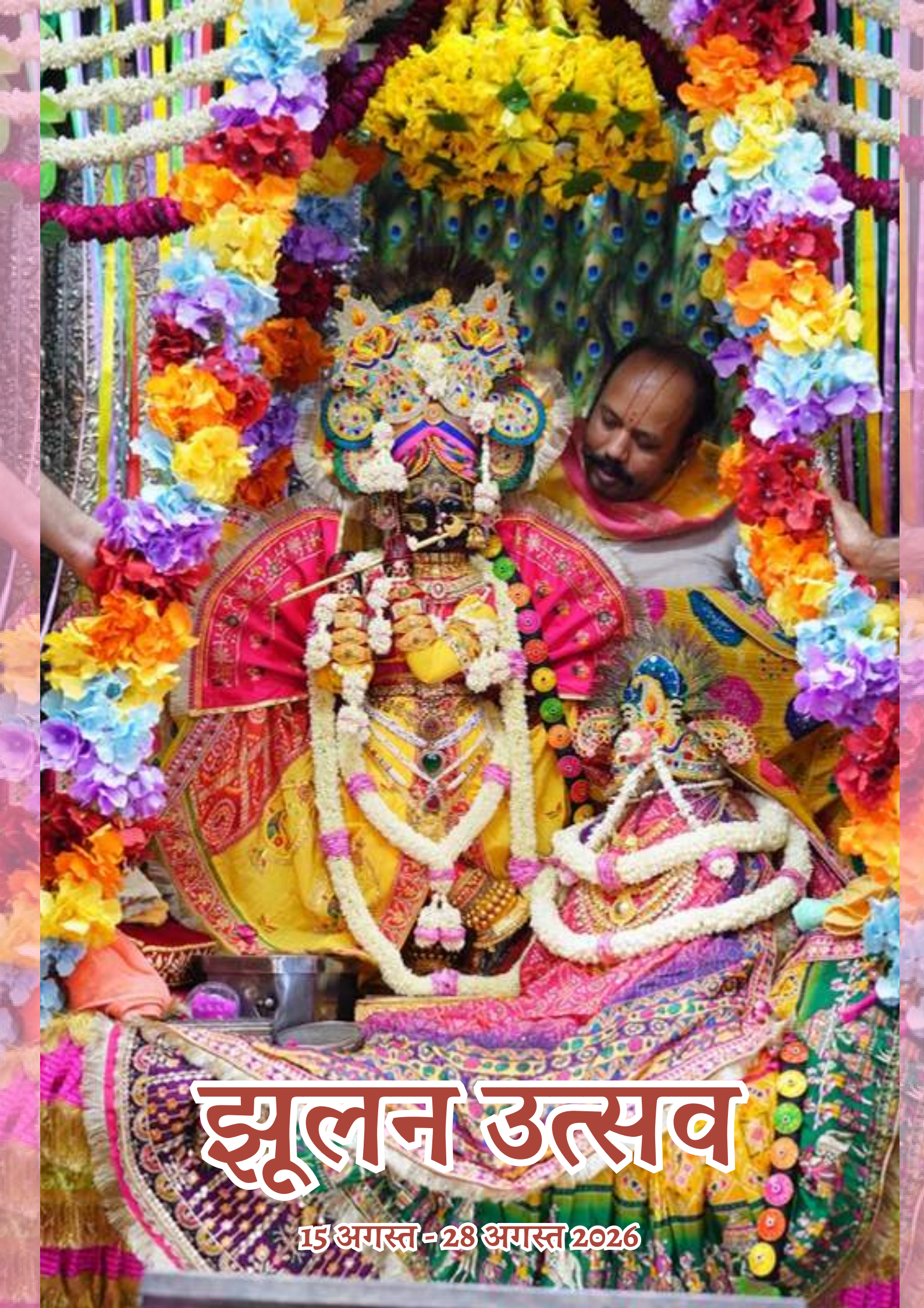


* Swastik* 15/210, Gopal Datt Mill
Building, Hamsagarpara,
Raipur (C.G.) 492001



E-mail : sgswastikgroup@yahoo.com
www.swastikgroup.com





झूलन उत्सव

15 अगस्त - 28 अगस्त 2026

हिंडोला (झुला) उत्सव:

श्रावण शुक्ल तृतीया (हरियाली तीज) से प्रारंभ होकर सलुने (रक्षाबंधन) तक संध्या समय नित्य नवीन हिंडोले में विराजमान होते हैं।

नित्य नवीन हिंडोला सेवा :

श्री राधावल्लभ लाल प्रतिदिन उत्थापन आरती से संध्या आरती उपरांत तक हिंडोले का सुख लेते हैं।

- कलात्मकता: श्रीजी महाराज नित्य नवीन और अलौकिक हिंडोलों में विराजते हैं। ये हिंडोले सोने-चांदी के अतिरिक्त ऋतु के अनुसार सुगंधित फूलों, ताजे फलों, हरी सब्जियों, जरी के वस्त्रों और बड (बरगद), आम, मोरछली (मौलश्री) से तैयार किए जाते हैं।



ऋतु अनुकूल विशेष भोग :

वर्षा ऋतु के आगमन और उत्सव के उल्लास में श्रीजी को मधुर व्यंजनों का भोग धराया जाता है

- **घेवर:** श्रावण का मुख्य भोग 'घेवर' (सादा और मलाई वाला) है
- **पुआ और जलेबी:** गरमा-गरम केसरिया जलेबी और चाशनी में डूबे मालपुआ (पुआ) का विशेष भोग सिद्ध किया जाता है।
- **दूध:** हिंडोला के समय श्रीजी महाराज को मेवे और केसर से युक्त औंदाया हुआ दूध अर्पित किया जाता है।

समाज गायन और पद :

समाज में झूलन के समय सर्वप्रथम श्रीमद हित हरिवंश महाप्रभु जी की रचना श्रीमद चतुरासी जी का पद “झूलत दोऊ नवल किशोर...” और फिर सभी रसिकों के पद राग-मल्हार में गाये जाते हैं

श्रीजी महाराज का विशेष श्रृंगार :

- हरियाली तीज: श्रीराधावल्लभ जी महाराज को लाल पोशाक धराई जाती है। संध्या आरती के पश्चात उन्हें सुरंग चुनरी धराई जाती है।
- पवित्रा एकादशी: श्रीराधावल्लभ जी महाराज को दोनों समय (श्रृंगार और संध्या) पवित्रा (रेशमी धागे की विशेष माला) धारण कराई जाती है।
- पूर्णिमा (रक्षाबंधन): दोनों समय श्रीराधावल्लभ जी महाराज के हस्तकमल में राखियाँ बांधी जाती हैं। जो की सभी रसिकों द्वारा श्रीराधावल्लभ जी महाराज को अर्पित की जाती है।



विशेष: रक्षाबंधन के दिन से ही समाज में हिंडोला उत्सव के विश्राम का पद एवं लाल जी की जन्म बधाई का गायन प्रारंभ हो जाता है और “आनंद आज नंद के द्वार”।



राधाष्टमी

19 सितम्बर 2026

श्रीराधाष्टमी महामहोत्सव:

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष अष्टमी को श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी की गुरु श्री राधा का प्राकट्य उत्सव मनाया जाता है।

सवारी और पूर्व तैयारी :

उत्सव का उत्साह लाल जी की छठी से ही प्रारंभ हो जाता है, “चलो वृषभान गोप के द्वार” पद तथा सभी रसिकों की बधाई रचना समाज में प्रारंभ हो जाती है। पंचमी से चार दिन तक श्रीजी की विशेष चाव सवारी (श्री राधावल्लभ मंदिर से बड़ा श्रीहित रासमंडल तक) जाती हैं, जो इस महा महोत्सव की पूर्व सूचना और उल्लास का प्रतीक हैं।



सप्तमी की रात्रि: ढाँढ़ी-ढाँढ़िन नृत्य

सप्तमी की रात्रि वर्ष में केवल एक ही बार इस रात्रि को शयन आरती के उपरांत भी श्रीजी के पट (दर्शन) खुलते हैं एवं नवीन माला, पोंची, हस्तफूल आदि पुनः धारण होते हैं श्रीजी के सन्मुख ढाँढ़ी-ढाँढ़िन (भांट) नृत्य करते हैं और बड़े चाव से श्रीजी की वंशावली का गान करते हैं।



राधाष्टमी :

मंगला आरती से पूर्व समाज में 'दाई और बधाई के पद' गाये जाते हैं। मंगला आरती के पश्चात श्रीजी महाराज का केसर मिश्रित दूध, दही, घी, शहद और बूरा से अभिषेक किया जाता है। इसके उपरांत समाज में बधाई गायन जिसमें “चलो वृषभान गोप के द्वार”, “आज बधाई है बरसाने” तथा श्रीहित किशोरी लाल जी महाराज के जन्म की बधाई होती।

दधिकांदौ: आनंद की वर्षा

राधाष्टमी का सबसे मुख्य आकर्षण 'दधिकांदौ' है, जिसमें दूध, दही, हल्दी और केसर के मिश्रण की परस्पर वर्षा की जाती है:

ब्रजवासिन कौ दधिकांदौ: श्रृंगार आरती के पश्चात ब्रजवासी और भक्तगण आनंद में झूमते हुए दधिकांदौ करते हैं।

आचार्य स्वरूपन कौ दधिकांदौ: राजभोग से पूर्व गोस्वामी बालकों और आचार्य स्वरूपों द्वारा रसमय दूध, दही, हल्दी और केसर के मिश्रण से दधिकांदौ संपन्न होता है

विशेष :

राजभोग आने से पूर्व निज मंदिर के बाहर साथिये (स्वस्तिक) धरे जाते हैं। श्रृंगार भोग के समय श्रीजी को विशेष उत्सव भोग धराया जाता है जिसमें पाग पंजीरी, गुजिया, लड्डू, मठरी आदि का विशेष होता है। संध्या के समय विशेष चाव सवारी मंदिर से बड़े रासमंडल जाती है।

- 19 सितंबर 8 शनि श्रीराधाष्टमी, श्रीहित महाप्रभुजी के गुरु को जन्मोत्सव मंगला आरती के बाद दधिकांदौ, 12 बजे से ब्रजवासिन कौ दधिकांदौ, 2 बजे से गोस्वामी स्वरूपों को दधिकांदौ, दधिकांदौ समाज सहित श्रीहित मंदिर, श्रीवनचन्द्रजी कौ डोल, श्रीसेवाकुंज होते भये श्रीहित रासमंडल पै जाय फिर श्रीयमुना स्नान । रात्रि में चाव, कृष्णजन्मानुसार साथिये धरे जाय, श्रीहित महाप्रभु जी की चाव के पीछे श्रीबिहारीजी की चाव "श्रीहरिवंशी हरिदासीजी" को स्मरण करावै, गोस्वामी श्रीहित किशोरीलालजी अधिकारी कौ जन्मोत्सव ।
- 22 सितंबर 11 मंगल एकादशी (परिवर्तिनी) ।
- 24 सितंबर 13 गुरु प्यारी प्रियाजू की छठी, आज तक प्रियाजी की बधाई होय, श्रीहित महाप्रभुजी के चित्र की प्रतिष्ठा भई ।
- 26 सितंबर 15 शनि पूर्णिमा, आज से साँझी प्रारम्भ । समाज में साँझी के पद, आज से फूलन की नाना प्रकार की झाँकी बनें, "वन की लीला लालहि भावै..., फूलन वीनन हौं गई सखी"।

आश्विन कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 27.09.2026 रविवार रात्रि से)

- 28 सितंबर 2 सोम दसठोन प्रियाजी कौ ।
गोस्वामी श्रीहित विशाललालजी कौ जन्मोत्सव ।
- 05 अक्टूबर 10 सोम गोस्वामी श्रीहित जीवनलालजी अधिकारी कौ जन्मो ०।
- 06 अक्टूबर 11 मंगल इन्दिरा एकादशी (रंगन की साँझी बने अमावस्या तक)
- 10 अक्टूबर 30 शनि अमावस्या ।

आश्विन शुक्ल पक्ष

- 20 अक्टूबर 10 मंगल विजय दशमी, श्रीजी महाराज कर्ण पर एवं लाल पोशाक (भारी श्रृंगार) धारण करें 'खेलत रास रसिक ब्रज मंडन'।
- 22 अक्टूबर 11 गुरु एकादशी (पापांकुशा) ।
- 24 अक्टूबर 13 शनि श्रीहित शोभितलाल गोस्वामी जी 'युवराज' कौ जन्मोत्सव ।
- 26 अक्टूबर 15 सोम शरदपूर्णिमा (शरद के पद 'मोहन मदन त्रिभंगी...') होय ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

(सेवा-गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल तिलकायत अधिकारी विलासवंश 27.10.2026, मंगलवार रात्रि से)

- 28 अक्टूबर 2 बुध द्वितीय शरद लाल पाग धारण, समाज में "लाल की रूप माधुरी" पद होय ।
- 01 नवंबर 8 रवि अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान ।
- 04 नवंबर 10 बुध गोस्वामी श्रीमोहनचन्द्र प्रभु कौ जन्मोत्सव ।
- 05 नवंबर 11 गुरु एकादशी (रमा) ।
- 06 नवंबर 13 शुक्र धनत्रयोदशी ।
- 07 नवंबर 14 शनि छोटी दीपावली ।
- 08 नवंबर 30 रवि दीपमालिका, श्रीजी चाँदी की हटरी में विराजें दोनों समय चौपड़ खेलें, सुनहरी जरी की पोशाक धारण
- 09 नवम्बर 1 सोम सोमवती अमावस्या । श्री गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, रात्रि में श्रीजी को विवाहोत्सव "नव दूलह दुलहिन" को तिलक करनौ प्रत्येक सेवक को आवश्यक कर्त्तव्य है, सुनहरी जरी की पोशाक धारण करे ।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

- 11 नवम्बर 2 बुध भ्रातृ दुतिया (भैया दौज के पद) ।
- 17 नवम्बर 8 मंगल गोपाष्टमी-श्रीजी महाराज हस्तकमल में छड़ी लें । (गोचारण की पोशाक नटवर वेष) ।
- 18 नवम्बर 9 बुध अक्षय नवमी, वृन्दावन-मथुरा युगल परिक्रमा, मदनदेर पर प्रसाद वितरण ।
- 21 नवम्बर 11 शनि प्रबोधनी एकादशी (देवोत्थान) चौक काढ़े जायें, दीपदान होय ।
- 22 नवम्बर 13 रवि निभृतनिकुंजविलासी, नित्यविहारी, श्रीराधावल्लभलाल जी कौ पाटोत्सव, श्रीवृन्दावन कौ प्राकट्य उत्सव, गोस्वामी श्रीहित सुन्दरवर प्रभु अधिकारी जी कौ जन्मोत्सव । आज ही श्रीवनचन्द्र महाप्रभुजी एवं आज तक जितने अधिकारी गद्दी पर विराजे सबको तिलकोत्सव दरबार आज ही भयो और होय, श्रीहितोत्सव की तरह समाज में साथिये, केला, वंदनवार पंचामृत स्नान, विशेष दीपदान रोशनी मन्दिर की सजावट आदि होय, अभूतपूर्व दर्शन होय ।
- 24 नवम्बर 15 मंगल पूर्णिमा ।

સાંઘી ઉત્સવ

25 સિતમ્બર - 10 અક્ટૂબર 2026



सांझी उत्सव:

भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक मनाया जाने वाला 16 दिवसीय सांझी उत्सव प्रिया-लाल के परस्पर मिलन और प्रेम का दिव्य प्रतीक है, जहाँ 'सांझी' शब्द 'सांझ' (संध्या) से प्रकट है। जिसे साक्षात युगल स्वरूप माना गया है। सखियाँ प्रियाजी को वन में पुष्प चुनने के बहाने ले जाती हैं जहाँ लालजी और प्रिया जी का मिलन सखियों द्वारा प्रिया लाल को सुख देने के और लीला के विस्तार के लिए कराया जाता है।

इसी उल्लास में वे चुने हुए पुष्पों से भूमि पर कलाकृतियाँ उकेरती हैं। इसी दिव्य भाव के कारण रसिक जन कहते हैं कि जो भी श्रद्धापूर्वक इस सांझी की सेवा करता है, वह अपने जीवन के मनोरथ सिद्ध करता है:

मनवांछित फल पाईये, जो कीजै इति सेव । सुनौं कुंवरि वृषभानु की यह सांझी साँचो देव ॥

समाज : “वन की लीला लाल ही भावें” तथा “सांझी बीनन हौं गयी” ये पद नित्य होते हैं।

फूलों की सांझी (पूर्णिमा से दशमी तक) :

उत्सव के शुरुआती 11 दिनों में श्रीजी के सन्मुख फूलों की सांझी बनाई जाती है।

रचना: इसमें ताजे सुगंधित फूलों (विशेषकर गेंदा, गुलाब और चमेली) की पंखुड़ियों से

भूमि पर सुंदर ज्यामितीय आकृतियाँ और लीला प्रसंग उकेरे जाते हैं।

भाव है कि श्री राधा जी और सखियाँ वन के फूलों से सांझी की रचना करती हैं।



रंगों की (सूखी) सांझी:

एकादशी से लेकर अमावस्या तक सांझी का स्वरूप और भी भव्य हो जाता है।

कला: इसमें बारीक पिसे हुए प्राकृतिक रंगों और अबीर-गुलाल का प्रयोग किया जाता है। कागज़ के

बारीक छेद वाले 'साँचों' की सहायता से अत्यंत सूक्ष्म चित्रकारी की जाती है।

विषय: इन चित्रों में निकुंज की दिव्य लीलाएं-प्रसंगों को रंगों के माध्यम से उकेरा जाता है

विशेष 'जल सांझी' की रचना :

अंतिम दिन अमावस्या पर जल सांझी की अलौकिक कला देखने को मिलती है, जो भक्त

और कलाकार के धैर्य की परीक्षा होती है:

जल के ऊपर: पानी की सतह पर विशेष चूर्ण बिछाकर उसके ऊपर रंगों से सांझी

बनाई जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो चित्र पानी पर तैर रहा हो।

जल के नीचे: यह और भी कठिन कला है, जिसमें पात्र के तल पर चित्र बनाया जाता है

और फिर सावधानी से पानी भरा जाता है ताकि रंग न फैले।



सांझी के सम्मुख विशेष भोग पकवान, फल,
जल आदि धराये जाते हैं।



शरद पूर्णिमा

26 अक्टूबर 2026



शरदोत्सवः

श्रीराधावल्लभ संप्रदाय में दो शरद मनाई जाती है प्रथम शरद में श्रीराधावल्लभ लाल सफ़ेद पाग, मुकुट और कटी काछनी धारण करें तथा द्वितीय शरद में श्रीराधावल्लभ लाल लाल पाग और टिपारे धारण करें। प्रथम शरद आश्विन पूर्णिमा को तथा द्वितीय शरद कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीय को मनाई जाती है।



श्रृंगार :

श्रीराधावल्लभ लाल जगमोहन में संध्या समय चौदंडी में पीछे की सफ़ेद पिछवाई और ऊपर का सफ़ेद चंदोवा, जगमोहन और मंदिर प्रांगण में सफ़ेद घटा के बीच सभी रसिकों को दर्शन देते हैं।



समाज गायनः

"मोहन मदन त्रिभंगी" संध्या समय इस पद को राग गौरी में प्रथम शरद के दिन गाया जाता है तथा "लाल की रूप माधुरी" संध्या समय इस पद को राग कल्याण में द्वितीय शरद के दिन गाया जाता है।

विशेष भोगः

दूध और चंद्रका

दूध का भोगः गाढ़ा किया हुआ केसरिया दूध जिसमें केवड़ा और गुलाब के अर्क का प्रयोग होता है

चंद्रका : विशेष रूप से मैदा मोमन की बुरा पूरित 'चंद्रका' का भोग लगता है,





कौशल विकास योजना



दोपमालिका

8 नवंबर 2026



दीपावली दीपमालिका:

कार्तिक कृष्ण अमावस्या अर्थात् दीपावली का उत्सव मंदिर में अत्यंत उल्लास, प्रकाश और 'लाड़' के साथ मनाया जाता है।



दीपमाला और अलौकिक आभा

दीपावली की रात्रि में श्रीजी का सम्पूर्ण महल अनगिनत दीपों की ज्योति से जगमगाता है। मंदिर के आंगन, प्रांगण और चारों ओर दीपमालिका की शोभा अत्यन्त आनंद देती है।



श्रृंगार और चाँदी की हटरी

- पोशाक: श्रीराधावल्लभ लाल लाल रंग श्वेत जरी की पोशाक धारण करते हैं।
- हटरी : श्रीराधावल्लभ लाल चाँदी की हटरी में विराजमान होते हैं।

चौपड़ क्रीड़ा:

दीपावली के दिन श्रीराधावल्लभ लाल दोनों समय प्रातः श्रृंगार आरती उपरांत राजभोग तक तथा संध्या आरती उपरांत शयन भोग तक चौपड़ क्रीडा (खेल) करते है।



विशेष भोग : दीपावली के पावन पर्व पर श्रीराधावल्लभ लाल को बालूशाही, टिपरती और गुजिया का मधुर भोग लगाया जाता है।



અક્ષાવૃંદ

9 નવંબર 2026



मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 25.11.2026 बुध रात्रि से)

- 26 नवम्बर 2 गुरु आज से समाज में बयालीस लीला होय,
गोस्वामी श्रीहित कीर्तिकुमार (लाल) जी महाराज कौ जन्मोत्सव ।
- 29 नवम्बर 6 रवि छीठ छठ, आज से हिम ऋतु को श्रृंगार होय ।
- 04 दिसम्बर 11 शुक्र एकादशी (उत्पत्ति) ।
- 08 दिसम्बर 30 मंगल अमावस्या । गोस्वामी श्रीहित सुखलालजी अधिकारी को जन्मोत्सव ।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

- 20 दिसम्बर 11 रवि एकादशी (मोक्षदा) ।
- 21 दिसम्बर 12 सोम व्यञ्जन द्वादशी, अंगीठी शीत उपचारार्थ श्रीजी के सम्मुख,
शृंगार और संध्या आरती पीछे रखी जाये ।
- 23 दिसम्बर 14 बुध गोस्वामी श्रीहित राधेशलालजी महाराज ठीकैत अधिकारी कौ जन्मोत्सव ।
- 24 दिसम्बर 15 गुरु पूर्णिमा ।

पौष कृष्ण पक्ष

(सेवा-गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल तिलकायत अधिकारी विलासवंश 24.12.2026, गुरुवार रात्रि से)

- 27 दिसम्बर 4 सोम श्रीहित गोपेन्द्रलाल गोस्वामी जी कौ जन्मोत्सव ।
- 3 जनवरी 11 रवि सफला एकादशी (सं 2027 प्रारंभ)
- 7 जनवरी 30 गुरु अमावस्या ।

पौष शुक्ल पक्ष

- 9 जनवरी 2 शनि आज से एक मास तक मंगला से पूर्व खिचड़ी भोग लगे । मंगला में नित्य नयी
फरगुल धारण होय । मंगला के उपरान्त श्रीजी भेष बदलकर छदम की झाँकी होये।
- 19 जनवरी 11 मंगल एकादशी (पुत्रदा) ।
- 22 जनवरी 15 शुक्र पूर्णिमा ।

माघ कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 23.01.2027 बुधवार रात्रि से)

- 25 जनवरी 4 सोम गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज वर्तमान ठीकैत अधिकारी को जन्मोत्सव ।
- 2 फरवरी 11 मंगल एकादशी (षट्तिला) ।
- 6 फरवरी 30 शनि अमावस्या (मौनी) ।

पावोत्सव

22 नवंबर 2026



कार्तिक शुक्ल तेरस कई उत्सव होने के कारण सब उत्सवों का तिलक उत्सव है।

श्री राधावल्लभ लाल का पाटोत्सव:

श्री वृंदावन प्राकट्य उत्सव

गोस्वामी श्रीहित सुन्दरवर जी तिलकायत अधिकारी का जन्मोत्सव

गोस्वामी श्रीहित वनचन्द्र महाप्रभु तथा और

आज तक अधिकारी गद्दी पर विराजे स

बका तिलकोत्सव दरबार आज ही हुआ और होगा



श्रृंगार :

श्रीराधावल्लभ लाल पीली जरी की पोशाक धारण करें

श्रीहितोत्सव की भांति पंचामृत अभिषेक होता है। साथिया, कलश धराये जाते हैं।

केला बंदनवार और पुष्पों से मंडप और मंदिर प्रांगण सजाया जाता है।

दीपावली की तरह विशेष दीपदान होता है।

विशेष भोग :

श्रीराधावल्लभ लाल को मोहन थाल, लड्डू, बूंदी ,सेव, मठरी आदि धराये जाते हैं

विशेष चाव सवारी एवं समाज :

मदन टेर (ऊँची ठौर) पर सुबह के समय आचार्यों की सन्निधि में रसिकों द्वारा श्री राधावल्लभ जी के पाटोत्सव कि बधाई गाई जाती है।

बधाई उपरांत चाव सवारी निकाली जाती है जोकि मदन टेर से श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी द्वारा प्रगटित बड़ा रासमंडल पर विश्राम होती है।

इस उत्सव में विशेष रूप से रसिकजनों द्वारा पारंपरिक नृत्य और भजन गायन की सेवा की जाती है और विद्यार्थियों के लिए चित्रकारी, सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।





खिचड़ी उत्सव



9 जनवरी - 8 फरवरी 2027



खिचड़ी उत्सव:

पौष शुक्ल द्वितीया (दौज) से प्रारंभ होकर माघ शुक्ल प्रतिपदा (एकम्) तक पूरे एक मास चलता है।

विशेष भोग : पौष शुक्ल द्वितीया (दौज) से प्रारंभ होकर माघ शुक्ल प्रतिपदा (एकम्) तक पूरे एक मास चलता

है। शीत ऋतु में श्रीराधावल्लभ लाल को सुख देने के लिए आचार्यजनों ने

खिचड़ी को बहुत ही सुन्दर तरीके से सजाया है इसमें चावल, दाल, शुद्ध घी, मेवा, गरम मसाले, आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग कर खिचड़ी सिद्ध की जाती है।

खिचड़ी के साथ विशेष रूप से पापड़, आचार, सब्जियां, गजक, रेवड़ी, फल, मेवा,

रबड़ी, फैनी, घेवर, मलाई, श्रीखंड आदि सामग्री भी धराई जाती है।

विशेष रूप से अदरक कूचा (चूर्ण) धराया जाता है।

“अदरक कूचा बनो चटपटो, कर पल्लव दोऊ चाटें”

श्रृंगार :

हिमऋतू का श्रृंगार जिसमें फरगुल और जयपुरी रजाई धराई जाती है।

फूलों की माला की जगह मलमल के कपड़े की मालाओं को धारण कराया जाता है।



छद्मवेश :

मंगला आरती के उपरांत श्रीराधावल्लभ लाल नित्य छद्मवेश में दर्शन देते हैं। छद्मवेश वो वेश जो प्रिया जी से मिलने के लिए लाल जी ने धारण किये जैसे मनिहारिन, इत्र फुलेल वाली, तोता मैना वाली, पान वाली (तम्बोलन), मालिन, फल वाली, सब्जी वाली, सांवरी सखी आदि।

समाज गायन :

पूरे महीने समाज में पहले ग्यारह (11) पद स्तुति के, ग्यारह (11) पद जगार (उठाने) के, तथा ग्यारह (11) पद खिचड़ी भोग के, और एक पद उस दिन खिचड़ी विश्राम का। ये चौतीस (34) पदों की श्रृंखला मंगला से पूर्व नित्य गाई जाती है।

विशेष : माघ शुक्ल दुतिया को श्रीराधावल्लभ लाल तरह तरह के टोपा और दुशाला में दर्शन देते है तथा इस दिन कई प्रकार के मोहन भोग (हलुआ) का भोग लगता है।

समाज में “अरी, मेरी वारि कौ भंवरवा” पद का गान होता है।





होली उत्सव : 18 मार्च 2027

युगल दर्शन : 20 मार्च 2027

डोल उत्सव : 22 मार्च 2027



होली उत्सव



बसंत पंचमी:

बसंत पंचमी के दिन से ही ब्रज में होली का डाँडा गड़ता है और ब्रज में 40 दिवसीय होली के उत्सव का प्रारंभ होता है। हिम ऋतू का श्रृंगार को विराम दे दिया जाता है।

श्रृंगार :

श्रीराधावल्लभ लाल को बसन्ती पोशाक, बसन्ती आभूषण, पुष्पों की माला तथा हस्त कमल और चरणों में नई मेहंदी धारण कराई जाती हैं।

श्रृंगार और संध्या आरती में किंचित गुलाल उड़ाया जाता है तथा श्रीराधावल्लभ लाल के सन्मुख तस्तरी में गुलाल धराया जाता है।



फुलैरा दूज: गुलाल की छूट

फाल्गुन शुक्ल द्वितीया (फुलैरा दूज) से होली का रंग गहरा होने लगता है:

श्रृंगार:

श्रीराधावल्लभ लाल की कमर में गुलाल की फेंट और बांधी जाती है और कपोलों (गालों) पर गुलाल लगाया जाता है।

श्रीराधावल्लभ लाल श्वेत (सफेद) पोशाक धारण करते हैं, उन्हें बेल-बूटों से सजी श्वेत पिछवाई और चंदोवा, चौदंडी में विराजमान होते हैं।

श्रृंगार आरती से राजभोग तक और संध्या आरती से शयन भोग तक निरंतर गुलाल उड़ाया जाता है।

रंगभरी एकादशी:

राजभोग आरती उपरांत मंदिर से वृंदावन के इतिहास की पहली सवारी नगर भ्रमण के लिए गुलाल उड़ाते हुए निकलती है। जब यह सवारी मंदिर लौट कर आ जाती है तब ही वृंदावन के सभी मंदिरों में पिचकारी का खेल प्रारंभ होता है।

युगल दर्शन :

फाल्गुन शुक्ल तेरस के दिन श्रीराधावल्लभ लाल लताओं की कुञ्ज में विराजमान होकर प्रतक्ष रूप में युगल रूप के दर्शन देते हैं।

“दौऊ मन मिल एकै भये, श्री राधावल्लभ लाल”



माघ शुक्ल पक्ष

- 8 फरवरी 2 सोम आज मोहनभोग को भोग लगे, समाज में मोहन भोग के पद होय, दोपा दुशालाओं के दर्शन होय 'वारी को भवरवा' पद समाज में, गोस्वामी श्रीहित मोहनलालजी महाराज अधिकारी कौ जन्मोत्सव । श्रीहित उदितमणि गोस्वामी जी कौ जन्मोत्सव ।
- 11 फरवरी 5 गुरु बसन्त पंचमी, बसन्ती पोशाक धारण बसन्त के पद समाज में, सेवाकुञ्ज में समाज, आज से शृंगार और संध्या आरती पर किंचित गुलाल उड़ायो जाये ।
- 15 फरवरी 9 सोम गोस्वामी श्रीहित कृष्णचन्द्र प्रभु जी को जन्मोत्सव ।
- 17 फरवरी 11 बुध एकादशी (जया) ।
- 20 फरवरी 15 शनि पूर्णिमा, होरी डांडो के पद, होरी धमार समाज में प्रारंभ, प्रथम यथामति पद आज से ।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

(सेवा-गोस्वामी श्रीहित मोहित मराल तिलकायत अधिकारी विलासवंश 21.02.2027, रविवार रात्रि से)

- 04 मार्च 11 गुरु एकादशी (विजया), गोस्वामी श्री किशोरीलाल जी अधिकारी की कुञ्ज में समाज, रात्रि में मानसरोवर रासमण्डल पर समाज । सब मिलकर जागरण करें।
- 5 मार्च 12 शुक्र श्रीहित भजनलाल गोस्वामी जी महाराज कौ जन्मोत्सव ।
- 7 मार्च 14 रवि शिव चौदस, समाज में जोगिया छदम होय ।
- 8 मार्च 30 सोम सोमवती अमावस्या ।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

- 10 मार्च 2 बुध फुलैरा दौज, समाज में रसिया प्रारम्भ (सेवाकुंज में भी समाज), शृंगार, संध्या आरती पर गुलाल खूब उड़े, कमर में गुलाल की फैंट बंधै, कपोलन (गालों) पर गुलाल ।
- 11 मार्च 3 गुरु आज से दशमी तक सेवाकुंज में छद्म लीला समाज ।
- 18 मार्च 11 गुरु आमलकी एकादशी रंग भरी ब्रज में होली प्रारम्भ, श्रीजी के मन्दिर से सवारी नगर यात्रा करे। रात्रि में होली, श्रीजी महाराज का विवाह महोत्सव "व्याहुले में श्रीजी के तिलक सब सेवकन को करनौ चाहिये ।"
- 20 मार्च 13 शनि दिन में अर्धांग के दर्शन अद्भुत होय ।
- 21 मार्च 15 रवि होलिका-दहन, श्रीहित सुकृतलाल गोस्वामी जी कौ जन्मोत्सव । पूर्णिमा ।
- 22 मार्च 1 सोम मोरछली की पत्ती के डोल में श्रीजी झूलें । प्रथम यथामति पद राग चैती गोरी में होय । गोस्वामी श्री गोपीनाथजी प्रभु का जन्मोत्सव । धुलैडी (डोलोत्सव) ।

चैत्र कृष्ण पक्ष

(सेवा-वैष्णव कमेटी (रासवंश) 22.03.2027 सोमवार रात्रि से)

- 26 मार्च 4 शुक्र बादग्राम में जागरण समाज में गो० श्रीहित हरिलाल जी अधिकारी कौ जन्मोत्सव ।
- 27 मार्च 5 शनि बादग्राम में होली (डोलोत्सव) समाजादि उत्सव होय ।
- 28 मार्च 6 रवि गोस्वामी श्रीहित वनचन्द्र महाप्रभुजी अधिकारी को जन्मोत्सव
- 02 अप्रैल 11 शुक्र पापमोचनी एकादशी ।
- 04 अप्रैल 13 रवि श्रीहित वृजराज कमल गोस्वामी जी को जन्मोत्सव ।
- 06 अप्रैल 30 मंगल अमावस्या ।

नाडी ज्योतिष विशेषज्ञ कस्पल इंटरलिक विशेषज्ञ, इ पी एस, स्टेलर एस्ट्रोलाजी विशेषज्ञ,

मीन २ नाडी विशेषज्ञ,
संप्रति इंटरनेशनल प्रोफेसर वैदिक विश्वविद्यालय शिकागो यू एस ए एवं सलाहकार ज्योतिष
शास्त्र विश्वविद्यालय फ्लोरीडा यू एस ए

पूरी पृथ्वी चार बार उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव एवं 117 देश में ज्योतिष पढ़ाने का सम्मान

श्रीराधावल्लभ संप्रदाय के शरणागत परिकर एवं श्री जी के चरणों में पूज्य गुरुदेव
तिलकायत अधिकारी श्रीहित मोहित मराल जी महाराज के चरण अरविंद में समर्पित शिष्य
प्रोफेसर डॉक्टर सुरेंद्र पंडित ज्योतिषीय सलाहकार में नियुक्त।

ज्योतिषीय सलाह के लिए सम्पर्क करें : 9971815356



WITH BEST COMPLIMENTS

SUNIL KUMAR AGRAWAL

204, VIKASH VIHAR APARTMENT

176, PATLIPUTRA COLONY

PATNA 800013 (BIHAR)

MOB : 9835043147

गौ सेवा



Shri Hit Harivansh Prachar Mandal Trust[®]

Federal Bank

Account Number :

22230200001771

IFSC : FDRL0002223



Donation For Gaushala & Gau Sewa



Axis Bank

Account No. :

9260200007932639

IFSC : UTIB0005998



Donation For Tree Plantation (Harit Kranti)



ICICI Bank

Account No :

1017050000707

IFSC :

ICIC00001017



